आराधना पाठ

(स्नान करते समय बोलना चाहिये)

।।१।।

मैं देव नित अरहंत चाहूं, सिद्धका सुमरन करौं।
मैं सुर गुरुमुनि तीनपद ये, साधुपद हिरदय धरौं।।
मैं धर्म करुणामय जु चाहूं, जहाँ हिंसा रंच ना।
मैं शास्त्र ज्ञान विराग चाहूं, जासु में परपंचना।।

।।२।।

चौबीस श्रीजिनदेव चाहूँ, और देव न मन बसै।
जिन बीस क्षेत्र विदेह चाहूँ, बंदिते पातक नसै।।
गिरनार शिखर समेद चाहूं, चंपापुर पावापुरी।
कैलाश श्रीजिनधाम चाहूं, भजत भाजै भ्रमजुरी।।

।।३।।

नवतत्त्व का सरधान चाहूँ, और तत्व न मन धरौं।
षट्द्रव्यगुन परजाय चाहूं, ठीक जासों भय हरौं।।
पूजा परम जिनराज चाहूं, और देव न चहूं कदा।
तिहुँकालकी मैं जाप चाहूं, पाप नहिं लागै कदा।।

।।४।।

सम्यक्त दर्शन ज्ञान चारित, सदा चाहूं भावसों।
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूं, महा हरख उछावसों।।
सोलह जु कारन दुख निवारण, सदा चाहूं प्रीतिसों।
मैं चित अठाई पर्व चाहूं, महामंगल रीतिसों।।

।।५।।

अनुयोग चारों सदा चाहूं, आदि अन्त निवाहसों।
पाये धरम के चार ये, चाहूं अधिक उत्साहसों।।
मै दान चारो सदा चाहूं, भवन-बस लाहो लहूं।
आराधना में चारि चाहूं, अन्तमें ये ही गहूं।।

।।६।।

भावना बारह जु भाऊँ , भाव निरमल होत हैं।
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूं, त्याग भाव उद्योत है।
प्रतिमा दिगंम्बर सदा चाहूं, ध्यान आसन सोहना।
वसुकर्म तैं मैं छुटा चाहूँ, शिवलहूं जहं मोह ना।।

।।७।।

मैं साधुजनको संग चाहूं, प्रीति तिन ही सों करों।
मैं पर्वके उपवास चाहूं, अवर आरंभ परिहरों।।
इस दुक्ख पंचमकाल माहीं, सुकुल श्रावक मैं लह्यो।
अरु महाव्रत धरि सको नाहीं,निबल तन मैंने गह्यो।।

।।८।।

आराधना उत्तम सदा, चाहूं सुनो जिनरायजी।
तुम कृपानाथ अनाथ 'द्यानत' दया करना,न्याय जी।।
वसुकर्मनाश विकास, ज्ञानप्रकाश मोको दीजिये।
करि सुगति गमन समाधिमरन,सुभक्ति चरनन दीजिये।।